B-I
L-2
Indian Geography

भारत के भू-आकृति खण्ड :-

1. उत्तर व उत्तर-पूर्व भारतीय पर्वत श्रेणी
   ↓
   हिमालय + पूर्वांचल

2. उत्तर भारत बृहत मैदान
   ↓
   सिन्धु - गंगा - ब्रह्मपुत्र

3. मरूस्थलीय

4. प्रायद्वीपीय पठार (पठार + पहाड़ियां / श्रेणी का मिश्रण)

5. तटीय मैदान

6. द्वीप समूह

भारत का भूगर्भिक इतिहास →

→ भारतीय स्थल मण्डल के भू-वैज्ञानिक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय प्लेट विविध भू-गर्भिक कालों में निर्मित स्थल खण्डों से बनी है। इसमें केम्ब्रियन पूर्व काल की प्राचीनतम चट्टानें प्रायद्वीपीय पठार में देखी जाती हैं और साथ-ही साथ तटीय मैदानों में नवीन/नूतन अवसादी

शैल भी देखे जा सकते हैं।

→ उत्तर भारत में हिमालय पर्वत की नूतन वलित पर्वत श्रंखला इसका परिचायक है कि भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के टकराने से विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रंखला का निर्माण हुआ।

→ हिमालय व प्रायद्वीपीय पठार के मध्य एक गहरा खड्ड हुआ करता था जिसमें नदियों ने अपने अवसादों के निक्षेप से वृहद् उत्तर भारतीय मैदान का निर्माण किया।

हिमालय →

जलवायु विभाजक

सामरिक विभाजक

जनजातीय

संसाधन के स्रोत

- → जल - ग्लेशियर
- → वनीय संसाधन
- → खनिज

पारिस्थितिकीय महत्व

- जैव विविधता
- भौतिक चक्रों में विविधता

सामाजिक - आर्थिक - सांस्कृतिक

- ऊर्जा
- पर्यटन

हिमालय की उत्पत्ति व विस्तार →

- नूतन वलित पर्वत श्रंखला
- पश्चिम से पूर्व दिशा में अवरोधित
- समानान्तर श्रंखलाओं का मिश्रण है - पश्चिम में चौड़ा व पूर्व में सकरा
- अवसादी शैलों का प्रभुत्व
- विश्व में सर्वोच्च पर्वत श्रंखला
  - इसकी ऊँचाई आज भी बढ़ रही है
- भूकम्प व भूस्खलन की घटना संभव परन्तु ज्वालामुखीयता का अभाव।

① पार हिमालय
(काराकोरम, लद्दाख, जास्कर श्रंखला)

② महान / हिमाद्री

③ मध्य / लघु हिमालय
हिमाचल

④ बाह्य हिमालय
शिवालिक

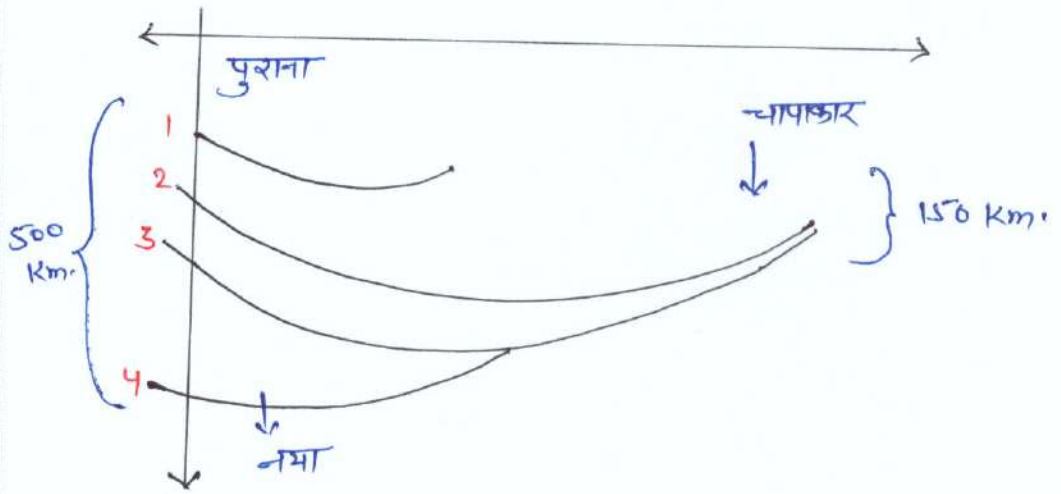

सिद्धान्त → कोबर (जर्मन भू वैज्ञानिक)
भूसन्नति आधारित पर्वत निर्माण
↓
पृथ्वी की सतह पर वृहत, कम गहराई

वाले धंसे हुए क्षेत्र। इनमें अवसादों का निक्षेपण होता है।

- की मान को बर के अनुसार पृथ्वी पर वलित पर्वतों का निर्माण भू-सन्नति क्षेत्रों में होता है। भू-सन्नति के किनारों पर कठोर चट्टानें होती हैं जिन्हें क्रेटोजन कहा जाता है।
- क्रेटोजन के अपरदन से नदियाँ भूसन्नति में अपने अवसाद जमा करती हैं। कालांतर में अवसादों के भारी होने पर भूसन्नति की तली का धसान होता है और साथ ही साथ किनारे के क्रेटोजन का अभिसरण प्रारम्भ होता है।
- इस अभिसरण के चलते भूसन्नति के निक्षेपों पर सम्पीड़न बल लगता है जिससे यह निक्षेप वलित होने लगते हैं और समानान्तर वलित पर्वतों का निर्माण होता है।
- यह सिद्धांत हिमालय की उत्पत्ति को भारत व यूरेशिया की प्लेटों के अभिसरण के कारण टेथिस भूसन्नति के निक्षेपों के

क्लन से पर्वत निर्माण मानता है।

① अवसाद

②

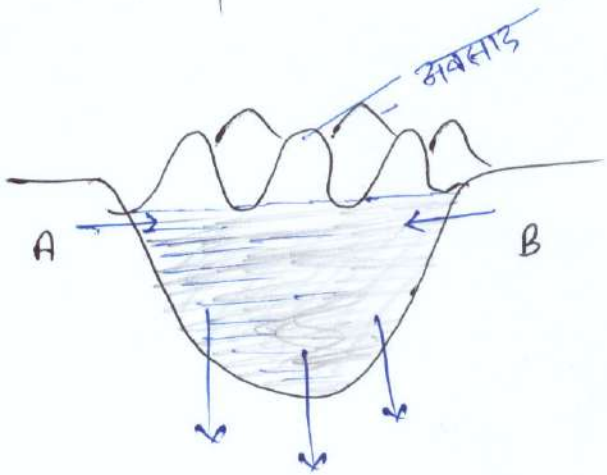

③

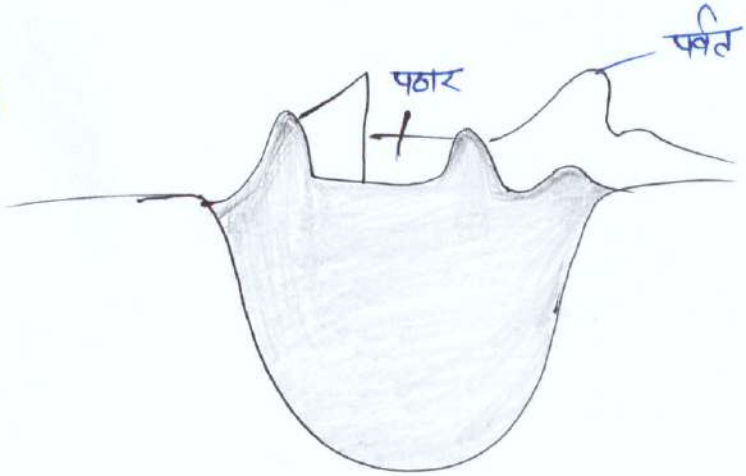

H.W.:- पीर पंजाल, जोजी ला, बनिहाल, बुर्जिल, शिपकी, भागा ला, माना ला, नीति ला, बुम्ला, बोमडीला, नाथु ला, जेलेप ला, बारा लाचा ला, खारदुंगला दर्रों की जानकारी।